बुद्ध : जाति, कुलीनता, दासता या Slavery, सामाजिक भेदभाव, सहभोज पर रोक, ऊँच–नीच तथा शोषण :–

Budha : Jaati, Kuleenta, Daasata ya Slavery, Saamaajik Bhedbhav, Sahbhoj per rok, Ooch-Neech Tatha Shoshan.

-: Author :-

Ambuj Kumar Mishra

यह पुस्तक प्राथमिक स्त्रोत के रूप में लिखी गई है
तथा शोधकर्त्ताओं को समर्पित है।

Email:- ambujkumarmishra2020@gmail.com

© कापीराईट सुरक्षित

Mobile No-8873904651

बुद्ध : जाति, कुलीनता, दासता या Slavery, सामाजिक भेदभाव, सहभोज पर रोक, ऊँच–नीच तथा शोषण :–

लेखन की आवश्यकता :–

राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र जैसे–सामाजिक विज्ञान के विषय इतिहास के स्वीकृत तत्वों के आधार पर टिके होते हैं।

जब हम ''राजनीति विज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण'' की बात करते हैं तो इसका अर्थ इतिहास के मूल तत्वों के आधार पर राजनीति के सिद्धांतों का निर्माण करना है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब सामाजिक विज्ञान के विषय जैसे– राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र के उद्देश्य ही इतिहास का निर्माण करने लगते हैं। अतः राजनीति एवं राजनीति विज्ञान का आधार तैयार करने वाले ऐतिहासिक दृष्टिकोण तथा तत्व का परीक्षण आवश्यक होता है। इस लेखन में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का निर्माण करने वाले तत्व ''जाति'' की उत्पत्ति तथा तत्कालीन दर्शन का परीक्षण तथा विश्लेषण किया गया है।

संक्षेप :–

ए0एल0 बाशम, हटन तथा रोमिला थापर जैसे विद्वानों ने वर्ण तथा जाति में अंतर माना है। वस्तुतः वर्ण तथा जाति परस्पर भिन्न संकल्पनाएं हैं तथा एक दूसरे के विरोधी भी हैं। जाति बौद्ध धर्म का दर्शन है। जाति वैदिक धर्म का दर्शन नहीं है। बुद्ध के दर्शन से ही ''जाति'' शब्द तथा जाति की संकल्पना की उत्पत्ति हुई है। बुद्ध सामाजिक क्रांति के जनक तथा प्रतिनिधि नहीं थे बल्कि प्रतिक्रांति के

जनक तथा प्रतिनिधि थे। बुद्ध के दर्शन ''प्रतीत्यसमुत्पाद'' से ही जाति की उत्पति हुई है। ''प्रतीत्यसमुत्पाद'' तत्व का 11वाँ तत्व जाति है। ऊँच–नीच की अवधारणा, सामाजिक भेदभाव, सहभोजता पर रोक, दास, दासी तथा दासता, **(Slave & Slavery),** समाजच्युत व्यक्ति, हीनशिल्प तथा हीन व्यक्ति, उच्च कुल तथा निम्न कुल, कुलीनता, जन्माभिमान या जन्म का अभिमान, चांडाल, अछूत या अस्पृश्य **(Untouchable)** ये सभी बुद्ध, बुद्ध के जीवन, बौद्ध धर्म दर्शन, बौद्ध संघ तथा बौद्ध साहित्य से संबद्ध हैं। शाक्य कुल में जिसमें बुद्ध का जन्म हुआ था, कुलीनता, जाति अभिमान तथा सहभोजता पर रोक के प्रथम उदाहरण मिलते हैं। बौद्ध साहित्य में भृतक कर्मकर (मजदूर या मजूर) की समाज में दीन, दुर्बल तथा निन्दित स्थिति, बेगार का उल्लेख मिलता है। बुद्ध के शिष्यों की सामाजिक संरचना आभिजात्य थी। बौद्ध संघ में वंचित समूह का प्रवेश निषेध था। बौद्ध साहित्य तथा धर्म दर्शन में ही जाति को वर्ण से संबद्ध कर दिया गया। तथा औपनिवेशिक काल में यह औपनिवेशिक लेखन तथा तत्पश्चात् जातिवादी राजनीति का आधार बना। बुद्ध के जीवन, धर्म दर्शन ने एक गतिशील समाज को गतिहीन, रूढ़िवादी, शोषक, प्रभुत्वकारी समाज में परिवर्तित कर दिया।

पूर्वी भारत में बौद्ध युग दास या **Slave** आधारित उत्पादन प्रणाली था तथा बौद्ध धर्म के विचार ने तीव्र विरोधाभाषी समाज तथा राज्य को जन्म दिया एवं वह इसका पोषक तथा बौद्धिक पक्ष बना।

बुद्ध : जाति, कुलीनता, दासता या Slavery, सामाजिक भेदभाव, सहभोज पर रोक, ऊँच–नीच तथा शोषण :–

राजनीति विज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण : समस्या

राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञान के विषय इतिहास के स्वीकृत तत्वों के आधार पर टिके होते हैं। जब हम ''राजनीति विज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण'' की बात करते हैं तो इसका अर्थ इतिहास के मूल तत्वों के आधार पर राजनीति के सिद्धांतों का निर्माण करना है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब सामाजिक विज्ञान के विषय जैसे राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र के उद्देश्य ही इतिहास का निर्माण करने लगते हैं। भारत में औपनिवेशिक शासन का उद्देश्य उन सामाजिक, राजनीतिक सिद्धांतों का निर्माण करना था जिसके आधार पर वे भारत में अपनी औपनिवेशिक सत्ता को बनाए रखें। जबकि मार्क्सवादी इतिहासकार राजनीतिक उद्देश्य से इतिहास का निर्माण करते हैं। अतः राजनीति तथा राजनीति विज्ञान का आधार निर्धारित करने वाले ऐतिहासिक दृष्टिकोण तथा तत्वों का परीक्षण करना आवश्यक होता है। औपनिवेशिक काल तथा उसके पश्चात् जिस ऐतिहासिक दृष्टिकोण तथा तत्वों का निर्माण किया गया उसी के आधार पर भारत में **Post Modern Politics** या उत्तर–आधुनिक राजनीति का उदय हुआ जिससे राज्य धुंधला गया या **Dilute** हो गया तथा पहचान की राजनीति प्रमुख तत्व हो गयी। समाजवाद का सिद्धांत भारत में ''जातिगत समाजवाद'' में परिवर्तित हो गया। समस्या यह है कि यदि

आधार विचार तथा तत्व मिथ्या है तो उसपर आधारित संपूर्ण तर्क, दर्शन, सिद्धांत तथा स्वीकृत ऐतिहासिक तत्व स्वतः ही मिथ्या हो जाता है तथा उसका स्वतः ही खंडन हो जाता है। यदि यह विचार ही मिथ्या या **False** है कि जाति ही वर्ण है तथा सत्य यह है कि वर्ण तथा जाति दो भिन्न संकल्पनाएं हैं तथा यह कि जाति बौद्ध धर्म का दर्शन है, वैद्धिक धर्म का नहीं तो अब तक का प्रायः सम्पूर्ण लेखन मिथ्या या **False** हो जाएगा तथा उस पर आधारित राजनीति भी मिथ्या या असत्य या **False** पर आधारित राजनीति हो जाएगी। ऐतिहासिक तथ्य तथा विश्लेषण ऐतिहासिक उत्तरदायित्व को भी सुनिश्चित करते हैं। इस लेखन या शोध प्रपत्र में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का निर्माण करने वाले तत्व ''जाति की उत्पत्ति तथा तत्कालीन दर्शन'' का परीक्षण किया गया है। वर्ण तथा जाति भिन्न संकल्पनाएं है तथा एक दूसरे के विरोधी भी हैं।

बुद्ध तथा बौद्ध धर्म का उत्तरदायित्व।

बुद्ध के दर्शन से ही जाति शब्द तथा जाति की संकल्पना की उत्पति हुई है।

बुद्ध सामाजिक क्रान्ति के जनक या प्रतिनिधि नहीं थे बल्कि प्रतिक्रांति के जनक तथा प्रतिनिधि थे। बुद्ध के दर्शन ने जाति, दासता, जाति पर अभिमान, कुलीनता या **Aristoracy,** सामाजिक भेद–भाव, सहभोजता पर रोक अर्थात एक साथ भोजन करने पर रोक तथा शोषण को बौद्धिक आधार प्रदान किया। बुद्ध के विचार प्रतिगामी विचार थे।

Structure, Superstructure, तथा Hegemony

माइकल फूको के अनुसार राज्य समाज में पहले से विद्यमान सत्ता संबंधों पर आधारित होता है। कार्ल मार्क्स के अनुसार राज्य एक वर्गीय संरचना है जहाँ समाज **Structure** है वहीं राज्य **Superstructure** है। ग्राम्सी के अनुसार शासक वर्ग केवल बल के माध्यम से ही अपना प्रभुत्व या **Hegemony** स्थापित नहीं करता बल्कि सांस्कृतिक आधिपत्य शासकों की शासन–शक्ति का आधार है।

शासक वर्ग समाजीकरण के विभिन्न तरीकों के माध्यम से शासितों पर अपनी संस्कृति, मूल्य, विश्वास थोपनें का प्रयास करता है। बुद्ध के दर्शन तथा विचार दासयुगीन व्यवस्था की प्रबंधकारी समिति का सहयोगी पक्ष है जो एक वर्ग द्वारा दूसरे पक्ष या वर्ग के शोषण को आसान बनाता है। बुद्ध के दर्शन तथा विचार ने जाति तथा वर्ण को समान माना। वर्ण का क्रम क्षत्रिय, ब्राहम्ण, वैश्य, तथा शूद्र बौद्ध धर्म में मिलता है जो श्रेणीबद्धता पर आधारित है। बौद्धसाहित्य में राजवंशों को क्षत्रिय घोषित किया गया। (अंगुत्तर, जातक, रोमिला थापर–अशोक तथा मौर्य सम्राज्य का पतन)

बौद्ध धर्म के विचार तीव्र विरोधाभासी समाज तथा राज्य को बनाए रखने का बौद्धिक आधार प्रदान करते हैं।

ए0 एल0 बाशम के अनुसार समस्त प्राचीन भारतीय सूत्र वर्ण तथा जाति शब्दों के बीच महान अंतर उपस्थित करते हैं। निश्चित रूप से जाति का मूल ज्ञात करना असंभव है तथा हम इसके विकास को धुंधले रूप में चित्रित करने के अतिरिक्त

कुछ नहीं कर सकते क्योंकि प्रारंभिक साहित्य में इस ओर अत्यधिक कम ध्यान दिया गया है। परन्तु सिद्धांतः यह निश्चित है कि जाति का विकास चार वर्णों से नहीं हुआ। यह तो निश्चित ही है कि जाति का विकास चार वर्णों के पश्चात् ही हुआ परन्तु इससे कोई तथ्य सिद्ध नहीं होता।

(ए0एल0 बाशम– अदभुत भारत)

हटन के अनुसार जाति तथा वर्ण पृथक सामाजिक संगठन हैं। दोनों की धारणायें भी भिन्न हैं।

(हटन–कास्टस इन इंडिया)

(डॉ0 जयशंकर मिश्रः प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास)

इतिहासकार रोमिला थापर ने अपनी पुस्तक ''अशोक तथा मौर्य सामाज्य का पतन'' में वर्ण तथा जाति में अंतर माना है। रोमिला थापर ने लिखा है ''यदि हम ब्राहम्णीय तथा बौद्ध स्रोतों को आमने–सामने रखकर देखें तो मालूम होगा कि जाति के संबंध में इन दोनों की दृष्टियाँ एक दूसरे से निश्चिय ही भिन्न थी। ब्राहम्णीय स्त्रोतों में मुख्य रूप से वर्णों का भेद किया गया है किन्तु बौद्ध स्रोत श्रेणी विन्यास तथा दर्जे का मूल्यांकन जाति के आधार पर करते प्रतीत होते हैं हालांकि वे वर्णों का भी उल्लेख करते हैं। (रोमिला थापर : अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन)।

भारतीय लेखन में अभी भी जाति तथा वर्ण को एक मानकर लेखन करने तथा राजनीति करने की प्रवृति है।

अतः यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जाति क्या है ? तथा वर्ण क्या है ? तथा दोनों किस प्रकार एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं। वर्ण क्या है ? इसकी व्याख्या पहले ही मेरी प्रस्तक :– ''डीकोडिंग वर्ण व्यवस्था– अम्बुज कुमार मिश्र'' **"Decoding varna vyavastha- Ambuj Kumar Mishra"** में की जा चुकी है।

Copy right number: L-66369/2017

प्रस्तुत लेखन में जाति क्या है ? जाति की उत्पति, जाति की अवधारणा का बौद्धिक आधार का विश्लेषण किया जा रहा है।

<u>जाति :–</u>

जाति संबंधी अवधारणा की उत्पत्ति बुद्ध के विचारों तथा दर्शन से होती है, वैदिक ग्रंथ से नहीं। जाति, कुलीनता, दासता **(Slavery)**, सामाजिक भेदभाव, ऊँच–नीच, सहभोजता पर रोक, शोषण बुद्ध तथा बौद्ध विचार, दर्शन की अविच्छन्न विशेषताएं हैं।

<u>आर्य</u>

वेदों में आर्य शब्द का उल्लेख है।

बुद्ध भी आर्य ही हैं। बुद्ध तथा बौद्ध धर्म के सिद्धांत हैं–

1. चार आर्य दृश्य।
2. चार आर्य सत्य।

यहाँ आर्य शब्द का प्रयोग हुआ है।

<u>द्वितीय आर्य सत्य :</u>

दुःख समुदायः दुःख का कारण है।

द्वादश निदान–प्रतीत्यसमुत्पाद।

प्रतीत्यसमुत्पाद के कारण दुःख का कारण जानने का प्रयास किया गया है। जीवन दुःखों का सांकेतिक नाम जरा–मरण है। शरीर धारण करना ही जरा–मरण है। जन्म का कारण भव है। जन्म ग्रहण करने की प्रवृति ''भव'' है। सांसारिक विषयों के प्रति हमारा जो उपादान है अर्थात उससे लिपटे रहने की जो अभिलाषा है वही हमारी जन्मवृति का कारण है।

द्वितीय आर्य सत्य, भव चक्र, द्वादश निदान :

बुद्ध के इस उपदेश को घुमाघुमा कर लोग याद करते हैं। बुद्ध के इस उपदेश को बौद्ध चक्र घुमाघुमा कर याद करते हैं। वर्तमान जीवन का कारण पूर्ववर्ती जीवन है तथा भविष्य जीवन का कारण वर्तमान जीवन है।

भूत जीवन :– 1 अविद्या 2 संस्कार

वर्तमान जीवन :– 3. विज्ञान 4. नामरूप 5. षडायतन 6. स्पर्श 7. वेदना 8. तृष्णा 9. उपादान 10 भव

भविष्य जीवन :– 11. जाति, 12. जरा–भरण

(दत्त चटर्जी : भारतीय दर्शन)

इस प्रकार 11वाँ तत्व या द्वादश निदान या प्रतीत्यसमुत्पाद का 11वाँ तत्व जाति है। जाति शब्द तथा विचार की उत्पत्ति बुद्ध के दर्शन द्वादशनिदान या प्रतीत्यसमुत्पाद से हुई है।

ऊँच–नीच की अवधारणा की उत्पत्ति

ऊँच–नीच की अवधारणा की उत्पत्ति भी बुद्ध के विचारों तथा दर्शन से हुई है। बुद्ध के दर्शन में ध्यान की उन्नति की क्रामिक अवस्थाएँ इस प्रकार कही गई है–

छठा ध्यान :– अपने–अपने कर्मानुसार सत्वों का ऊँच–नीच में गति में जन्म तथा मृत्यु का ज्ञान। (मझ्झिम)

भारत में जाति की संकल्पना को वैज्ञानिक शब्दावली में स्थान देकर वैधता या **Legitimacy** प्रदान करने का प्रयास किया गया है। विज्ञान कक्षा **(9) NCERT** की पुस्तक के पृष्ठ संख्या–**93–94** में वर्गीकरण– समूहों का पदानुक्रमिक संरचना लिखी है। पुनः विभिन्न स्तरों पर जीवों को उपसमूहों में वर्गीकृत किया गया है जैसे–

जगत (किंगडम)– फाइलम (जन्तु), डिवीजन (पादप)

वर्ग (क्लास)

गण (आर्डर)

कुल (फैमिली)

वंश (जीनस)

जाति (स्पेशीज)

यहाँ स्पेशीज या **Species** का अनुवाद जाति किया गया है।

ऐसा जाति को वैधानिकता या **Legitimacy** तथा वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने के लिए किया गया है। इस प्रकार वर्गीकरण के पदानुक्रम में जीवों को विभिन्न लक्षणों के आधार पर छोटे–छोटे समूहों में बांटते हुए हम वर्गीकरण की

आधारभूत इकाई तक पहुँचते हैं। यहाँ वर्गीकरण की आधारभूत इकाई जाति या **Species** है। इस प्रकार जाति को स्पेशीज तथा **Species** को जाति के रूप में लोकप्रिय बनाया गया है तथा यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि जाति सच्चाई है तथा जाति ही समाज की मूलभूत इकाई है तथा जाति को समाज की रचनात्मक तथा कार्यात्मक इकाई बनाने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक भेदभाव

आदिवासियों, समाजच्युत व्यक्तियों तथा दासों के अतिरिक्त बौद्ध ग्रंथ चार वर्णों तथा अनेक हीन व्यक्तियों तथा शिल्पों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। वे जन्माभिमान का विशेषकर दास बालिकाओं के साथ अंतर्विवाह तथा समाजच्युत व्यक्तियों के साथ सहभोज के निषेध का उल्लेख करते हैं, लेकिन वे क्षत्रियों को महत्व देते हैं। (मजूमदार, रायचौधरी, दत्त– भारत का वृहत इतिहास)

गोत्र बहिर्विवाहः उत्तरवैदिक काल

गोत्र बहिर्विवाह का प्रारंभ उत्तरवैदिक काल में हुआ। यह गोत्र से बाहर विवाह की प्रणाली थी। गोत्र बहिर्विवाह दो गोत्रों, कुलों या जनों को आपस में जोड़ती थी या विभिन्न कुलों को आपस में जोड़ती थी।

पुत्री को दुहितृ कहा गया है अथति दो कुलों का हित चाहने वाली। दुग्ध एक संस्कृत शब्द है जबकि दुग्ध का भ्रष्ट रूप दुह है जो बाद में उत्पन्न हुआ तथा क्षेपक ही माना जाएगा।

यह विश्लेषण तथा आग्रह कि पुत्री ही गाय दुहती थी इसी कारण दुहितृ कहलायी मानने में प्रर्याप्त संकोच है। वैदिक साहित्य में केवल गोत्र बहिर्विवाह का उल्लेख है तथा जाति संबंधी विवाह का नियम कुछ भी नहीं है।

शाक्य (कपिलवस्तु के)

बुद्ध का जन्म शाक्य कुल में हुआ था। शाक्य के संबंध में निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं। राजबलि पाण्डेय के अनुसार शाक (शाल या साख) के जंगलों को साफ करके वहाँ बसने के कारण वे शाक्य कहलाये।

सगोत्र विवाह :– शाक्य शब्द की उत्पत्ति का दूसरा कारण इन लोगों में सगोत्र विवाह शक्य होना था।

कुल :– शाक्य स्वयं को कोसल के इक्ष्वाकु (सूर्यवंश) की एक शाखा मानते थे। बुद्ध का जन्म इन्हीं साकियों (शाक्यों) में हुआ था तथा उन्हें अपनी बिरादरी में श्रेष्ठ कहा गया है। (जाति सेट्ठों, दीघ,

पालि टेक्सस्ट सोसाइटी)

बुद्ध के कुल को उत्तम तथा अविच्छिन्न क्षत्रिय वंश कहा गया है। (सुत्त निपात)

यह शाक्य का कुल था जो कोसल की राजधानी साकेत से निर्वासित होकर हिमालय के तट प्रदेश में चले गए तथा वहाँ उन्होंने कपिलवस्तु नगर की स्थापना की (महावस्तु)। शाक्य जनपद एक संघ था तथा उसका शासन कुछ कुलीन व्यक्ति करते थे, जो राजा कहलाते थे।

सगोत्र विवाह का अर्थ :–

सगोत्र विवाह का अर्थ उसी गोत्र में विवाह या प्रतिषिद्ध सपिण्ड संबंधियों के साथ विवाह करना होता है। शाक्यों में सगोत्र विवाह या सपिण्ड संबंधियों के साथ विवाह की प्रथा थी।

जन्माभिमान तथा दास बालक–बालिकाओं के साथ अंतर्विवाह का प्रतिषेध तथा समाजच्युत व्यक्तियों के साथ सहभोज का निषेध।

''के0सी0 श्रीवास्तव– प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति'' के अनुसार शाक्य गणराज्य में लगभग 80,000 परिवार थे। शाक्य लोगों को अपने रक्त पर बड़ा अभिमान था तथा इसी कारण वे अपनी जाति के बाहर विवाह नहीं करते थे।

कोसल के राजा प्रसेनजित ने शाक्यों से एक असली क्षत्रिय कन्या विवाहार्थ मांगी थी। परन्तु शाक्यों ने धोखा देकर वसवखत्तिया नाम की एक दासीपुत्री को भेज दिया जो विड्डभ की माता हुई। इसी का बदला लेने के लिए विड्डभ ने ऐसा किया। विडड्भ ने सावत्थी में अचिरावती नदी के किनारे शाक्यों को युद्ध में हराया किन्तु नदी में बाढ़ आ गई तथा सारी सेना सहित उसे बहा ले गयी।

(धम्म पद अठ्ठकथा)

(राधा कुमुद मुकर्जी–हिन्दू सभ्यता)

कहा गया है कि एक बार विड्डभ शाक्य राज्य गया था तब शाक्यों ने ''दासीपुत्र'' कहकर उसका अपमान किया था। यह भी कहा गया है कि विड्डभ के जाने के बाद शाक्यों ने उस स्थान को दूध से धो दिया था जिसे वापस आने पर विड्डभ ने देख लिया था। विवाह का प्रस्ताव लाने वाले राजा प्रसेनजित के

दूत को विश्वास दिलाने के लिए शाक्यों ने भोजन संबंधी नाटक किया। यह भोजन संबंधी सामाजिक भेद–भाव या अन्य के साथ भोजन संबंधी सामाजिक भेद–भाव करने की जानकारी प्रदान करता है।

दासता या दास प्रथा (Slavery)

शाक्यों में पहले से प्रचलित दासता या दासप्रथा (Slavery)

बुद्ध की आरंभिक दुर्बलताएं : दास तथा दासियाँ

बुद्ध ने स्वयं स्वीकार किया ''भिक्खुओं! संबोधि प्राप्ति करने से पूर्व मैं भी जन्म, वृद्धि, जरा, रोग तथा मृत्यु, दुख तथा आस्रवों के वशीभूत था। मैं भी उन्हीं वस्तुओं को ढूंढता था जो इन्हीं के वशीभूत हैं जैसे कि स्त्री तथा बच्चे, दास तथा दासियाँ (Slaves) तथा भेड़ तथा बकरियाँ, कुक्कट, शूकर, हाथी, पशु , अश्व, बड़वा, सोना तथा चाँदी''। (मझ्झिम)

दासता, दास प्रथा (Slave and Slavery)

बौद्ध साहित्य में तीन प्रकार के दास का उल्लेख है–

एक वे जो पुरखों से प्राप्त किये गए।

दूसरा वे जिन्हें खरीदा गया था या जो उपहार में मिले थे।

तीसरा जो घर में पैदा हुए।

(विनय पिटक,

भिक्खुनी विभंग,

संघ दिसेस)

दंडदास या दंड के रूप में दास बनाने का उल्लेख है। (कुलवाक जातक, जातक)

एक दासी का मूल्य सौ कार्षापण था। (जातक)

<u>निम्नलिखित परिस्थितियों के कारण दासता होती थी–</u>

लड़ाई में बंदी बनाया जाता था। (जातक)

मृत्युदंड में परिर्वतन (जातक)

ऋण के बदले (जातक)

बलात् पद्च्युति (विनय

महावग्ग

सुमंगल विलासिनी)

न्यायालय के दंडस्वरूप (जातक)

पैसा भर देने से (जातक) अथवा दास के स्वामी की इच्छानुसार दासता का अंत किया जा सकता था। (जातक, दीघ)।

दास के साथ मारना–पीटना, दागना, बंदी गृह में रखना तथा स्वल्प मात्रा में भोजन देना, कुपोषण इत्यादि कठोर व्यवहार किया जा सकता था। (जातक)

दास परिचारक के रूप में कार्य करते थे। (जातक)

दास पदाति के रूप में कार्य करते थे। (जातक)

दास को लिपि या शिल्प की शिक्षा दी जाती थी।

बौद्ध संघ में दास का प्रवेश वर्जित था। जो दासता से मुक्त नहीं थे उसे भिक्षु नहीं बनाते थे। (विनय, महावग्ग)

जातकों में दी गई कहानियों में दासों की दुर्दशा का उल्लेख आता है।

नगर तथा दास (Slave)

नगरों में कुछ विशेष सड़कों तथा मुहल्लों में विभिन्न पेशा करने वालों की बस्तियाँ थी।

जातक के अनुसार :–

बनारस में हाथी दाँत का काम करने वालों की गली– दंतकार वीथी। (जातक)

रंगरेजों की गली– रजक वीथी। (जातक)

वैश्य वीथी– वेस्स व्यापारी तथा बुनकरों का मुहल्ला (ठान)। (जातक)

दासों की क्रय–विक्रय की जानकारी मिलती है। (अंगुत्तर)

दास बाजार में बिकनें के लिए आते थे। कभी बाजार के चलन से भी दासों का मूल्य तय होता था। जैसेः– एक दासी का मूल्य सौ कार्षापण था। (जातक)

(राधाकुमुद मुकर्जी–हिन्दू सम्यता)

चांडाल :–

चांडाल पालि या प्राकृत शब्द है तथा कम से कम यह संस्कृत या वैदिक शब्द तो नहीं ही है।

चांडाल तथा बौद्धधर्म :–

''रोमिला थापर ने अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन'' में लिखा है–

''जातक कथा में चांडाल भाषा का उल्लेख आता है जो आदिवासी बोली हो सकती है। (चित्त संभूतजातक जातक, जातक)

जातकों में घृणित जातियों तथा विशेषकर चांडाल का उल्लेख है।

फाहयान के अनुसार मध्यदेश में उच्चवर्ग के लोग किसी प्राणी को नहीं मारते, मद्यपान नहीं करते तथा लहसुन तथा प्याज नहीं खाते थे, उनसे बिल्कुल ही अलग चांडाल थे जो और लोगों से पृथक रहते थे, जब वो नगर या बाजार के द्वार पर प्रवेश करते थे तब वे अपना आगमन सूचित करने के लिए एक लकड़ी के टुकड़े पर चोट करते थे जिससे लोग जान–जाते थे तथा अलग हो जाते थे तथा उनके संपर्क में नहीं आते थे। (मजूमदार, रायचौधरी, दत्त– भारत का वृहत इतिहास)। बौद्ध युग में चांडाल जाति अत्यंत निम्न जीवन जीती थी तथा उसे नगर सीमा के बाहर रहना पड़ता था, उसे सर्वत्र तिरस्कार ही मिलता था। (जातक)। नगर प्रवेश की अनुमति भी चांडाल को नहीं था। चांडाल नगर सीमा के बाहर ही अपनी कला के करतब दिखाकर अपना जीवन यापन करते थे। (जातक)

जातकों से चांडाल की अत्यंत हीन अवस्था का पता चलता है। जातकों में चांडाल की अनेकानेक दयनीय अवस्थाओं का चित्रण है। चांडाल से हवा भी दूषित हो गयी समझी जाती थी। (जातक)

मातंग जातक में लिखा है कि एक चांडाल जब नगर में प्रविष्ट हो रहा था तो उस पर एक श्रेष्ठि दुहिता की दृष्टि पड़ गयी। लड़की ने उसके विषय में पृच्छा की तब ज्ञात हुआ कि यह चांडाल पुत्र है। लड़की के मुख से निकला ''ओह मैंने तो अशुभ दर्शन कर लिया''। उसके बाद अनेक लोगों ने उसे (चांडाल पुत्र को) खूब मारा। (जातक, मातंग जातक)।

यह विवरण चांडाल की हीनावस्था का द्योतक है। (प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास– डॉ0 जयशंकर मिश्र)

अछूत

रोमिला थापर ने ''अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन'' में लिखा है कि अछूतों की सामाजिक स्थिति को स्वीकार कर किया गया था। अछूत परिवार सहित नगर के बाहर या इसके भीतर थोड़ी सी जगह में रहते थे। अछूतों को जानबूझकर अशिक्षित रखा जाता था जिससे उनकी स्थिति और भी कमजोर पड़ गयी थी। (चित्त संभूत जातक, जातक)

भृतक कर्मकर (मजूर) की सामाजिक स्थिति (मजदूर या **Labour)**

कृषक भूमि पर वह परिवार जो उस कृषि भूमि का स्वामी होता था स्वयं या भृतक कर्मकर (मजूर) रखकर जोतता था। (जातक)

अर्थात कृषक परिवार खेत जोतने के लिए भृतक कर्मकर (मजूर अर्थात मजदूर) रखते थे। (जातक)

भृतक कर्मकर समाज में निन्दित था। उसे दास **(Slave)** से भी नीचा समझा जाता था। (दीघ, अंगुत्तर, मिलिंद)।

बेगार

राजा के खेतों में बेगार

राजा के खेतों में बेगार कराए जाते थे। तगड़े किसान घर पर अपने खेतों को खाली छोड़कर राजा के खेतों में बेगार पकड़ाकर मँगाए जाते थे। तो उस

शोचनीय स्थिति को जातक में बहुत बुरा समझा गया है तथा सामाजिक दुर्दशा का लक्षण माना गया है। (जातक)

यह श्रेणीबद्ध राजनीतिक–सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक व्यवस्था का परिचायक है।

<u>बुद्ध तथा मांसाहार</u>

जैन लेखक देवसेनाचार्य (8वीं सदी) ने अपने ग्रंथ ''दर्शनसार'' में लिखा है कि बुद्ध प्रारंभ में जैन थे तथा जैन आचार्य पिहिताश्रव ने सरयू नदी के तट पर स्थित पलाश नामक ग्राम में श्री पार्श्व के संघ में उन्हें दीक्षा दी तथा मुनि बुद्धकीर्ति नाम रखा। कुछ समय बाद वे मत्स्य तथा मांस खाने लगे तथा रक्त वस्त्र पहन कर अपने धर्म का उपदेश देने लगे और कहते थे कि इस प्रकार के भोजन में कुछ हानि नहीं है। (विमल चन्द्र लाहा– कृत बुद्धिस्ट स्टडीज में कामता प्रसाद जैन, राधा कुमुद मुकर्जी– हिन्दू सभ्यता)

निष्कर्ष– जैन स्त्रोतों से इतना पता चलता है कि जैन विचारकों में 8वीं सदी में यह धारणा विद्यमान थी कि बुद्ध मत्स्य तथा मांस खाते थे तथा इस प्रकार के भोजन में वे कोई हानि नहीं मानते थे। वैशाली में बुद्ध तथा उनके शिष्यों के भोजन के लिए सीह ने मांस बनवाया तो निगंठों ने वैशाली में घर–घर जाकर यह झूठा समाचार फैला दिया कि बौद्ध लोग सीह के घर गोमांस खाने आएगें।

(विनय प्राची पु0 मा0)

देवदत्त का बुद्ध से आग्रह हुआ कि भिक्षुकों के लिए और भी कड़े नियम बनाए जाय। जैसे–भिक्षु केवल वन में रहें, वे वृक्षमूल में आश्रय लें छत के नीचे नहीं, भिक्षा से निर्वाह करें, निमंत्रण स्वीकार नहीं करें, वे चीथड़ों (पांसाकुल) का चीवड़

पहनें उपासकों को दिये हुए वस्त्र नहीं, मांस या मत्स्य का भोजन न करें। बुद्ध ने कहा कि ये नियम ऐच्छिक थे, आवश्यक नहीं। (विनय)।

बुद्ध पावा आए तथा वहाँ चुंद कम्मार पुत्त (लुहार) के अंबवन में ठहरे। वहाँ चुंद ने अनेक प्रकार की खाद्य सामग्री तैयार करा कर बहुत सा सूकरमाद्दव भी भगवान के सामने रखा। वही उनका अंतिम भोजन हुआ। भगवान ने कहा ''हे चुंद सूकरमाद्दव मुझे परोसो तथा खादनाय भोजन सामग्री भिक्षु संघ को दे दो। (उदान अटठकथा)

प्राचीन टीकाकारों के अनुसार सूकरमाद्दव सूअर का मुलायम स्नेह मिला हुआ मांस था (राधा कुमुद मुकर्जी– हिन्दू सभ्यता)

<u>हीन शिप्प</u>

कला तथा शिल्प के क्षेत्र में जातकों में अठारह प्रकार के महत्वपूर्ण शिप्पों अर्थात शिल्पों का उल्लेख आता है। लेकिन कुछ शिल्प तथा कलाओं को हीन शिल्प या हीन शिप्प अर्थात निन्दित माना जाता था, जैसे–व्याध, वागुरिक (जाल लगाकर फँसाने वाले), मछुवे (कैवर्त या मत्स्यघाती), सौनिक (पशुघाती) तथा चमड़ा सिझाने वाले जिनकी वृति जीव हिंसा पर अवलंबित या आधारित थी। ऐसे ही नट, नर्तक, गायक आदि के काम तथा बेंत, तिनकों आदि को बीनकर सामान बनाना तथा गाड़ी बनाना भी वन्य जातियों के शिल्प कर्म थे, हीनशिल्प समझे जाते थे।

(राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता, मजूमदार, रायचौधरी, दत्त– भारत का वृहत इतिहास)

गंगा के किनारे या उससे कुछ दूर जाल लगाकर जानवरों के फँसाने वाले निषाद ग्राम थे।

(जातक – नेसाद ग्राम (निषाद ग्राम)

थेर गाथा– अट्ठकथा

मिगलुद्दक ग्राम)

जो जंगली पशु को लाते तथा उनके चमड़े तथा हाथी दांत आदि सामान बेचते थे।

पुक्कस (यह पालि रूप है, संस्कृत रूप पौल्कस है)।

पुक्कस को बौद्ध साहित्य में मेहतर के रूप में उपस्थित किया गया है। ये मदिरा बनाने तथा उसको बेचने के कारण ही स्तर से नीचे गिर गए होगें।

(ए0एल0बाशम– अद्भ्रत भारत)

बौद्ध युग में भी पुक्कस जाति थी जो अत्यधिक हीन समझी जाती थी। समाज का निम्नस्तरीय कार्य इन्हें सौंपा जाता था। (जातक)।

(डॉ0 जय शंकर मिश्र – प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास)

वेण :

बौद्ध युग में वेण को हीन जाति के रूप में स्वीकार किया गया है।

बांस अथवा लकड़ी का सामान बनाना इसका प्रमुख धंधा था। (जातक)

(डॉ0 जय शंकर मिश्र :– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास)

बुद्ध की सेवा :–

प्रारंभ से ही भिक्षु बारी–बारी से बुद्ध का चीवर पात्र लेकर परिचर्या करते थे। वृद्धावस्था में बुद्ध ने आनंद को अपना निजी शरीर परिचारक नियुक्त किया।

बुद्ध के शिष्यों का सामाजिक आधार

बुद्ध के शिष्य समाज के उच्चवर्गीय लोग तथा प्रतिभागी संन्यासी, ब्राहम्ण, तपस्वी बने। बौद्ध संघ का निर्माण उच्चवर्गीय सामाजिक संरचना के आधार पर हुआ। बौद्ध संघ में सम्मिलित करने में सामाजिक भेदभाव किया जाता था।

बौद्ध संघ का सामाजिक आधार उच्चवर्गीय, आभिजात्य, जाति अभिमान आधारित था तथा यह संकुचित था। (संयुक्त निकाय, थेरीगाथा, विनय, अंगुत्तर, संयुक्त, मझिझम, प्राची पुस्तक म0, राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता)।

संन्यासी, तपस्वी, ब्राहम्ण, प्रतिभागी

कोडञ्ञ, वप्प, भद्दिय, महानाम तथा अस्सगि नामक ब्राहमण् तपस्वी जो बुद्ध के तप साधन के समय साथी थे, बुद्ध के शिष्य बने।

जटिल अग्निहोत्री मुनी कस्सप तथा उनके दो भाई नदी कस्सप तथा गया कस्सप कुल 1000 जाटिल बुद्ध के शिष्य बने। संजय तथा उनके 250 शिष्य जिनका संघ था जो टूट गया तथा सभी बुद्ध के शिष्य बनें। (राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता)

धनी, श्रेष्ठी :–

बनारस के धनी श्रेष्ठी का पुत्र यश, उसका पिता, माता, पत्नी, चार मित्र तथा 50 साथी बुद्ध के शिष्य बने। भद्र वर्गीय 30 धनी युवाओं को जिनका मुखिया भद्र थे,

बुद्ध के शिष्य बने। श्रावस्ती का श्रेष्ठी सुदत्त अर्थात अनाथपिण्डक बुद्ध का शिष्य बना।

बौद्ध संघ की स्थापना

प्रथम उपदेश धम्मचक्कपवत्तन के पश्चात् पाँचों संन्यासी ब्राहमण कोडञ्ञ, वप्प, भद्दिय, महानाम तथा असग्गि बुद्ध के शिष्य बन गए। बनारस के धनी श्रेष्ठी का पुत्र यश, उसका पिता, माता, पत्नी, चार मित्र तथा 50 साथी ये बुद्ध के शिष्य बन गये, तथा इन कुल साठ लोगों को मिलाकर बौद्ध संघ की स्थापना की गई। बौद्ध संघ की स्थापना में एक भी दास (Slave), चांडाल, अछूत (Untouchable), भृतक कर्मकर (मजूर अर्थत मजदूर), हीनशिप्प, अर्थात व्याघ, वागुरिक, मछुआ या कैवर्त, सौनिक या पशुघाती, चमड़ा सिझाने वाले, नट, नर्तक, गायक, बेंत, तिनका आदि को बीनकर सामान बनाने वाले, गाड़ी बनाने वाले, नेषाद या निषाद आदि सामाजिक समूह शामिल नहीं थे।

क्षत्रिय, उच्च कुल

बुद्ध के दर्शन तथा विचार ने जाति तथा वर्ण को एक माना। बौद्ध धर्म में वर्ण का क्रम क्षत्रिय, ब्राहमण, वैश्य, शूद्र मिलता है जो श्रेणीबद्धता पर आधारित है तथा राजवंशों को क्षत्रिय घोषित किया। (अंगुत्तर, जातक, रोमिल थापर– अशोक तथा मौर्या साम्राज्य का पतन)

शाक्य :–

शाक्यों मे बुद्ध ने अपने पिता शुद्धोधन, पुत्र राहुल, मौसी गौतमी के पुत्र नंद, भद्रिक या भद्रिय नामक शाक्य राजा, अनुरूद्ध, आनंद, उपालि, नापित, चचेरा भाई देवदत्त को अपना शिष्य बनाया।

उपालि, नंदपनंद, कुंडदन जो शाक्य कुलपुत्र थे बौद्ध धर्म के महान प्रतिनिधि हुए।

मल्ल :

बौद्ध धर्म के कुछ महान व्यक्ति मल्ल थे जैसे कि आनंद, उपालि, देवदत्त जो बुद्ध का हठी प्रतिपक्षी था, दब्ब, खंड सुमन, सीह।

लिच्छवि

प्रसिद्ध बुद्ध भक्त लिच्छवि निम्नलिखित थे –

भद्दिय, साल्ह तथा अभय, नंदन महामात्र, अंजन वनिय नामक राजकुमार, वज्जिपुत्त, सीह जो लिच्छवियों का सेनापति था पहले निगंट ज्ञातपुत्त का शिष्य था बाद में बुद्ध का भक्त हो गया, सच्चक बुद्ध के शिष्य बने।

हर्यक :

मगध का शासक अजातशत्रु बुद्ध का शिष्य बना।

बौद्ध स्त्री, भिक्षुणी, उपासिका

इनका स्वरूप भी अभिजात वर्गीय या **Aristocratic** था।

धनी श्रेष्ठी :–

बनारस के धनी श्रेष्ठी के पुत्र यश की पत्नी बुद्ध की प्रथम उपासिका– शिष्या बनी।

क्षत्रिय

बुद्ध ने कपिलवस्तु के अंतःपुर की स्त्रियों, अपनी पत्नी यशोधरा को बौद्ध धर्म का उपदेश दिया। बौद्ध भिक्षुणी संघ की स्थापना शाक्य स्त्रियों ने की। इनमें बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी तथा अन्य स्त्रियाँ तिस्सा, अभिरूपनंदा, मित्ता, सुन्दरी नंदा सम्मिलित थी।

लिच्छवि :–

सीहा, जेन्ता, वासेट्ठि तथा अंबपालि गणिका प्रसिद्ध लिच्छवि महिला बुद्ध भक्त तथा शिष्या बनी।

बौद्ध भिक्षुणियों के नाम का उल्लेख :

बौद्ध ग्रंथ थेरी गाथा में बौद्ध भिक्षुणियों के नाम उल्लिखित हैं। जिनमें बारह प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक हैं।

उच्चपद तथा अर्हन्त प्राप्त व्यक्ति या भिक्षु

स्वरूप– इनमें एक भी साधारण या निम्नवर्गीय व्यक्ति शामिल नहीं था।

इनका स्वरूप भी अभिजात वर्गीय या **Aristocratic** था।

उच्च पद तथा अर्हन्त प्राप्त व्यक्ति या भिक्षु निम्नलिखित थे–

पुरूष :–

मल्ल :

दब्ब : इसे बौद्ध संघ ने उच्च पद पर चुना था।

खंड सुमन– इसे छः प्रकार की अभिज्ञा प्राप्त हुई थी।

लिच्छवि–

अंजन वनिय :– यह एक लिच्छवि राजकुमार था जो अर्हन्त हो गया था।

महिला

शाक्य –

महाप्रजापति गौतमी, तिस्सा, अभिरूपा नंदा, मित्ता, सुन्दरी नंदा अर्हन्त पद को प्राप्त हुई।

लिच्छवि :–

सीहा : यह लिच्छवियों के सेनापति सीह के बहन की कन्या थी।

सीहा अर्हन्त पद पर पहुँच गई।

वासेट्ठि– यह अर्हन्त बनी

गीत की रचना :

इनके रचनाकारों का स्वरूप भी अभिजात वर्गीय या **Aristocratic** था।

महिला : कुछ शाक्य स्त्रियों ने थेरीगाथा में सुरक्षित गीतों की रचना की।

इन गीतों के रचनाकारों में कुछ निम्नलिखित थीं–

महाप्रजाति गौतमी, तिस्सा, अभिरूपानंदा, मित्ता, सुन्दरी नंदा।

अंगुलिमाल डाकू तथा कानून एवं व्यवस्था की समस्या :

बुद्ध ने श्रावस्ती में चालिका वन में अंगुलिमाल डाकू के हिंस्र स्वभाव को परिवर्तित किया तथा उसे भिक्षु बनाया।

(संयुक्त, थेरीगाथा, विनय, अंगुत्तर, मझ्झिम्, प्राची पुस्तक मा0, राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता)

बौद्ध संघ में प्रवेश वर्जित :

बुद्ध ने अल्पवयस्क (अर्थात 15 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति), चोर, हत्यारा, ऋणी व्यक्ति, राजा का सेवक, दास (Slave) तथा रोगी व्यक्ति का बौद्ध संघ में प्रवेश वर्जित कर दिया। (प्राचीन भारत का इतिहास– द्विजेन्द्र नारायण झा तथा कृष्ण मोहन श्रीमाली, ए0एल0बाशम : अदभुत भारत, डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी– प्राचीन भारत का इतिहास)।

ब्राहमणों तथा श्रमणों के ऐसे संप्रदाय जो बौद्ध नहीं थे दासों (Slaves) को अपने में प्रविष्ट कर लेते थे, लेकिन बौद्ध संघ में यह नियम था कि कोई भी भागा हुआ दास (Slave) भिक्षुक नहीं बनाया जा सकता था। अर्थात केवल वही दास जिसे उसके स्वामी ने आज्ञा दी हो या मुक्त कर दिया हो बौद्ध संघ में प्रवेश प्राप्त कर सकता था। जातक में एक कुम्भकार तथा एक चांडाल के श्रमण होने का उल्लेख है, किन्तु बौद्ध श्रमण नहीं। (जातक, राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता)। रामशरण शर्मा के अनुसार बुद्ध ब्राहमणों की सभा में गए, क्षत्रियों की सभा में गए, गृहपतियों की सभा में गए, लेकिन शूद्रों की सभा में नहीं गए।

(रामशरण शर्मा – प्रारंभिक भारत का परिचय)

बुद्ध के अवशेषों का बंटवारा

बुद्ध के अवशेषों का बंटवारा केवल क्षत्रिय कुलों में हुआ। बौद्ध तथा जैन ग्रंथ लिच्छवियों को क्षत्रिय कहते हैं। क्षत्रिय होने के नाते लिच्छवियों को बुद्ध के अवशेषों में भाग लेने का अधिकार मिला। (महापरिनिब्बान सुतंत)। अजातशत्रु ने बुद्ध के अवशिष्ट अस्थियों में अपना भाग माँगने के लिए दूत भेजकर कहलवाया ''भगवान क्षत्रिय थे, मैं भी क्षत्रिय हूँ। मुझे भगवान के अस्थि– अवशेष का भाग मिलना चाहिए। मैं भगवान के अस्थि– अवशेष पर एक स्तूप बनवाऊँगा। (दीघ)

बौद्ध धर्म का विकास, त्रिपिटक का संकलन,

बुद्ध के विचारों का संकलन– प्रथम बौद्ध संगीति में बुद्ध के विचारों का संकलन हुआ। संकलनकर्त्ताओं का स्वरूप अभिजात वर्गीय या **Aristocratic** था। संकलनकर्त्ता उपालि तथा आनंद शाक्य क्षत्रिय कुल के थे। परंपरानुसार बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् मगध की राजधानी राजगृह में एक विशाल बौद्ध भिक्षु जनसमूह समवेत हुआ। इस सभा में बुद्ध के प्रधान शिष्य उपालि ने जिस रूप में महात्मा बुद्ध के उपदेशों को सुना था अपनी स्मृति से विनय पिटक (संघ के नियमों) का पाठ किया। एक अन्य शिष्य आनंद ने सुत्त पिटक को जो सिद्धांत तथा आचरण विषयों पर महात्मा बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है, पाठ किया। (ए0एल0 बाशम – अदभुत भारत)

दास या Slave आधारित उप्पादन प्रणाली

पूर्वी भारत में बौद्ध युग में गणराज्यों तथा इस क्षेत्र के शासकों में या राज्यों में उपादन की प्रणाली दास या Slave आधारित थी। दास, मजदूर आधारित उत्पादन की प्रणाली के अधिशेष पर निर्भर व्यवस्था में नए धार्मिक समूह बौद्ध धर्म का उदय हुआ जैसा कि एथेन्स में, यूनान में या समकालीन विश्व में हुआ था। इस व्यवस्था में दास या Slave थे, मजदूर थे, परिचारक, सेवक, गणिका सभी विद्यमान थे। बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार राजाओं, कुलीनों, व्यापारियों तथा शहरी क्षेत्रों में ही हुआ था। बुद्ध उपवन में निवास करते थे। बुद्ध उस समय के अधिकांश सामान्य श्रमणों तथा सन्यासियों से भिन्न थे। यह वानप्रस्थ तथा संन्यास नहीं था। शेष 62 या 363 संप्रदायों में कुछ को छोड़कर अधिकांश वनाखास या वानप्रस्थ ही हुआ करते थे। इस व्यवस्था के पीछे दास, मजदूर का श्रम छिपा हुआ था, जिनकी मुक्ति का मार्ग बौद्ध धर्म में नहीं था, और ना ही बौद्ध धर्म में इनके प्रति कोई सहानुभूति थी। जबकि यूनानी नाटककार यूरिपिडीज ने जो दास युग में हुआ था उसकी दासों तथा जनसाधारण के साथ पूर्ण सहानुभूति थी। कहा गया है कि बौद्ध धर्म दुःखवाद का सिद्धांत दर्शन है। जिसमें जन्म भी दुःख है, जरा (वृद्धावस्था) भी दुःख है, व्याधि भी दुःख है, मरण भी दुःख है, अप्रिय मिलन भी दुःख है प्रिय वियोग भी दुःख है, लेकिन दास या Slave, मजदूर, परिचारक, सेवक का दुःख दुःख नहीं है। चमड़ा सिझाने वालों, मछुआरों इत्यादि का दुःख दुःख नहीं है। व्याध, वागुरिक (जाल लगाकर फँसाने वाले), मछुवे (कैवर्त या मत्स्यघाती), सौनिक (पशुघाती), चमड़ा सिझाने वाले जिनकी वृति जीवहिंसा पर आधारित थी या अवलंबित थी, ऐसे ही नट, नर्तक,

गायक आदि के काम, बेत, तिनकों आदि को बीनकर सामान बनाना तथा गाड़ी बनाना भी जो वन्य जातियों के शिल्पकर्म थे हीन शिप्प समझे जाते थे, का दुःख दुःख नहीं था। दरअसल बौद्ध धर्म के विचार तीव्र विरोधाभासी समाज तथा राज्य को बनाए रखते हैं।

स्रोत :

1. दत्त, चटर्जी : भारतीय दर्शन
2. ए0एल0 बाशम : अद्भुत भारत
3. हटन : कास्टस इन इंडिया
4. डॉ0 जयशंकर मिश्र : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
5. रोमिला थापर : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन
6. राधाकुमुद मुकर्जी : हिन्दू सभ्यता
7. विज्ञान (कक्षा–9)– **NCERT**
8. मझिझम, सुत्तनिपात, धम्मपद, अठ्ठकथा, संयुक्त निकाय, विनय पिटक, भिक्खुनी विभंग, संघ दिसेस, जातक, कुलवाक जातक, चित्तविभंग जातक, मातंग जातक, विनय, महावग्ग, सुमंगल विलासिनी, महापरिनिब्बान सुतंत, दीघ, अंगुत्तर, उदान अठ्ठकथा, महावस्तु।
9. मजूमदार, रायचौधरी, दत्त :– भारत का वृहत इतिहास
10. के0सी0 श्रीवास्तव :– प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति

11. देवसेनाचार्य :– दर्शन सार

12. विलमचन्द्र लाहा :– बुद्धिस्ट स्टडीज

13. प्राची पुस्तक मा0 :–

14. द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली– प्राचीन भारत का इतिहास

15. डॉ रमाशंकर त्रिपाठी :– प्राचीन भारत का इतिहास

16. रामशरण शर्मा :– प्रारंभिक भारत का परिचय

17. सभ्यता की कहानी :– अर्जुन सिंह **(NCERT)**

18. विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास – डॉ0 सुशील माधव पाठक।

19. एंटोनियो ग्राम्सी :– प्रिजन नोट बुक्स।

20. कार्ल मार्क्स– वर्कस

21. **IGNOU – e-Content, Content (M.P.S.-001, M.P.S-003, M.P.S-004, M.P.S-007, M.P.S-008,** तथा सभी)।

22. रोमिला थापर – प्राचीन भारत।

नोट :– किसी भी विवाद का न्यायक्षेत्र कटिहार रहेगा।